Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

जिला सिरमौर के प्रमुख लोक वादकों का संगीत के क्षेत्र में योगदान

Ashish Chauhan[1], Dr. Rajeev Sharma[2]

1 Research Scholar, Dept. of Music, Himachal Pradesh University, Shimla
2 Assistant Professor, Dept. of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

शोध सार

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख लोकवादकों और उनकी वादन शैली को समझने के लिए उनका व्यवस्थित रूप से वर्गीकरण किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। इसके द्वारा किसी भी जानकारी को सूक्ष्म और व्यवस्थित रूप से प्राप्त किया जा सकता है। लोकवादकों के सांगीतिक योगदान के प्रत्येक पहलुओं को जानना एवं उसे प्रस्तुत करना अति आवश्यक है। इस शोध पत्र में लोक वादकों के साक्षात्कारों, विचारों को प्रस्तुत किया गया है ताकि लोक संगीत और इससे जुड़े वादकों द्वारा प्राप्त ज्ञान और योगदान को ज़िन्दा रखा जा सके। इन्हीं सब पहलुओं को ध्यान में रखते हुए शोध कार्य को व्यवस्थित रूप देने के लिए सिरमौर के अन्तर्गत आने वाले प्रमुख लोक–वादकों के जीवन एवं उनके सांगीतिक योगदान को प्रस्तुत किया गया है।

बीज शब्दः जसरंगी–जुगलबी, ख्याल।

भूमिका

लोक वादकों की अपनी एक महत्ता है, इनके बिना लोक संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। लोक गीत, लोक नृत्य और लोक–नाट्य की भान्ति ही लोक वाद्य परम्परा पीढ़ी दर पीढ़ी हम तक पहुंची है। जिसमें सभ्यता, संस्कृति, स्थानीय परिवेश का पूर्णतः समावेश देखने को मिलता है। वास्तव में लोक जीवन से ही समस्त वाद्यों का प्रचार–प्रसार हुआ है। जहां लोक–जीवन ने वाद्यों का विकास किया, वहीं इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए भी संरक्षित रखा है। विभिन्न अवसरों पर प्रदेश के लोक वादकों द्वारा वादन से अलग–अलग रसों का निष्पादन बड़ी कुशलता पूर्वक होता है। त्योहारों व पर्वों में होने वाला लोक वाद्यों का वृन्द वादन सामूहिक उत्साह, हर्ष एवं आपसी भाईचारे को प्रदर्शित करता है। लोक वाद्यों पर बजने वाली ढीली नाटी पर सैंकड़ों–हज़ारों लोग एक गोलाकार पंक्ति में एक साथ गाकर नृत्य पेश करते हैं।ढोल–नगाड़ा पर बजने वाली ताल और उठान बढ़त आदि से रोमांच की स्थिति उत्पन्न होना लाज़मी है। शहनाई पर बजने वाली लोक धुनें समस्त लोकरंजन को गाने पर विवश कर देती हैं। इन वाद्यों के साथ बजने वाले अनेकों सहायक वाद्यों घण्टी, करनाल, रणसिंगा आदि से वीर रस की उत्पत्ति माहौल को शाही अन्दाज़ प्रदान करती है। हिमाचल प्रदेश के सिरमौर ज़िला के अन्तर्गत आने वाले लोक संगीत में प्रयोग होने वाले लोक वाद्यों पर बजने वाली तालें और उन पर होने वाला नृत्य सभी के मन को प्रसन्नचित्त कर उठता है। लोक वाद्यों पर वादन से जनसाधारण की पावों की थिरकन और लोक गीतों में होने वाले स्थानीय भाषा के व्यंग्य से सारा माहौल झूम उठता है।

विषय चयन

वर्तमान समय में संस्कृति के पाश्चात्यकरण होने के कारण मानवीय समाज अपनी संस्कृति, मानवीय मूल्यों, आध्यात्मिकता एवं सामाजिक आदि परिवेश को भूलता जा रहा है। खासकर नई युवा पीढ़ी अपनी भारतीय

विरासत को नजर अन्दाज करते हुए देखी जा सकती है। हमारे अध्यात्म के क्षेत्र में संगीत का कार्य, सामाजिक क्षेत्र के भिन्न–भिन्न संस्कारों में होने वाली परम्पराएं और उनमें संगीत की भूमिका, लोकरंजन से सांस्कृतिक मंचों के कार्यक्रमों तक पारम्परिक लोक कला एवं संस्कृति में प्रयोग होने वाले लोक वाद्य यंत्र और लोक वादकों का पतन होना स्पष्ट रूप से देखने को मिल रहा है।

उद्देश्य

- हिमाचल प्रदेश के प्रमुख लोक वादकों का संगीत के क्षेत्र में योगदान का अध्ययन

अनुसंधान कार्य का क्षेत्र

- शोध कार्य का क्षेत्र जिला सिरमौर के प्रमुख लोक वादकों का संगीत के क्षेत्र में योगदान रहा।

अनुसंधान प्रविधि

- शोध कार्य का सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

ज़िला सिरमौर के प्रमुख लोक वादक

श्री बंसी राम

संगीत की सेवा में पीढ़ी दर पीढ़ी ताल्लुक रखने वाले श्री बंसी राम पेशे से दुमाणा वादक है। आपका जन्म सन् 4 दिसंबर 1958 को गांव द्राबिल डाकघर शिरी क्यारी, तहसील शिलाई ज़िला सिरमौर, हि.प्र. में हुआ। लगभग 45 वर्षों से लोक संगीत एवं लोक वाद्यों के प्रचार–प्रसार और इसके सरंक्षण में आप अहम् भूमिका निभा रहे हैं। आप ढोल, नगारा, रणसिंगा, थाली लोक वाद्य भी बजाने में कुशल है।

हिमाचल प्रदेश में लोक वाद्यों की बात की जाए तो इसका सबसे अधिक प्रयोग दैविक कार्यों, मन्दिरों एवं धार्मिक अनुष्ठानों में होता है। ज़िला सिरमौर के द्राबिल नामक स्थान पर देवता महासु और ठारी माता के मंदिरों में अनेक वर्षों से पूजा, दैविक कार्यों, आरतियों एवं पर्वों–उत्सवों में श्री बंसी राम का महत्वपूर्ण स्थान है। सुबह 4 से 5 बजे की आरती में देवता को दुमाणा, रणसिंगा, ढोल, शंख थाली आदि बजाकर जगाने की प्रथा भूतकाल से चली आ रही है। इसी प्रकार दिन में, फिर सांयकालीन आरती तथा रात्रि की पूजा–अर्चना के बाद देव–वाद्यों को भी मंदिर में ही स्थान दे दिया जाता है। श्री बंसी राम दैविक कार्यों की तरह ही समाज के अन्य संस्कारों में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। जन्म संस्कार हो या मुण्डन संस्कार, शादी ब्याह एवं विभिन्न संस्कारों में आप ज़िला सिरमौर केपारम्परिक लोक वाद्य विद्या को प्रस्तुत करते हैं।लगभग नौ पीढ़ियों से आपका परिवार पारम्परिक लोक वाद्य कला को संजोते आ रहे हैं, जो कि अद्भुत है। ऐसा ही क्रम आपके वंशावली में भी आगे देखने को मिल रहा है। इसके अलावा आपके अनेक शिष्य हैं, जो बाहरी राज्यों से आपके पास लोक वाद्य कला को सीखने के लिए आते हैं। आप भी निःस्वार्थ भाव से संगीत का ज्ञान शिष्यों में बांटते जा रहे हैं, ताकि लुप्त होती जा रही इस कला एवं पारम्परिक लोक वाद्यों को बचाया जा सके।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

श्री मस्त राम

श्री मस्त राम अपनी वंश परम्परा की चौथी पीढ़ी को आगे चलाने वाले पेशेवर ढोल और नगारा वादक है। आपका जन्म श्री सनी राम और जानकी देवी जी के घर सन् 1960 ई. में गांव पेन–कुफर, डाकघर जडोल–टपरोली, तहसील राजगढ़, ज़िला सिरमौर, हि.प्र. में हुआ। संगीत की प्रेरणा आपके पिता से ही आपको प्राप्त हुई। आप नगारा और ढोल दोनों में निपुण हैं।

वर्तमान में आप महाराज शिरगुल नामक मंदिर में मुख्य लोक वादक के तौर पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। शिरगुल महाराज, जिसे शिव का ही रूप माना जाता है, इनके अधीन आप और आपका परिवार निःशुल्क देव–परम्पराओं और इनसे जुड़े पारम्परिक देव वाद्यों को सुरक्षित रखे हुए हैं। शिरगुल महाराज की तरह ही माता (माँ काली), डूम देवता, दूधाधारी महाराज बलग इन सभी दैविक कार्यक्रमों में आपको वादन के लिए बुलाया जाता है। जन्म संस्कार, मुण्डन संस्कार, ,शादी के संस्कारों में भी मस्त राम जी एवं उनके साथी पारम्परिक लोक शैली को बजाकर बधाई देते हैं। जिसमें नगारा बढ़त करते हुए मुख्य भूमिका निभाता है और उसके साथ शहनाई, दो ढोल एवं करनाल या रणसिंगा संगत करते हैं।

संस्कारों की तरह ही श्री मस्त राम लोक एवं जन–सम्पर्क के माध्यम से भी ज़िला में सरकार की नीतियों को समयानुसार संगीत के माध्यम से जन–जन तक पहुंचाते आ रहे हैं। आप करीब 51 वर्षों से पारम्परिक लोक विद्या को प्रचार व प्रसारित करते आ रहे हैं। वर्तमान में लगभग 10–15 संगीत विद्यार्थियों को आप इन वाद्यों की शिक्षा दे रहे हैं, ताकि वर्तमान में लुप्त हो रही इस कला और इन वाद्यों को जीवित रखा जा सके।

श्री विद्यानन्द सरैक

आपका जन्म 25 जून, 1941 ई. को माता श्रीमती मुन्नी देवी तथा पिता श्री गणेशा राम के घर देवठी मझगांव के वास खुन्न में हुआ। आपके पिताजी श्री गणेशा राम नगारा, ढोलवाद्यों के बहुत कुशल वादक थे। इन्हीं की प्रेरणा से आपने देव–कार्यों, संस्कारिक कार्यों की वादन शैली को नगारा और ढोल पर बजाना सीखा।

आपने वादन के साथ–साथ हिमाचल प्रदेश की पारम्परिक लोककला एवं संस्कृति को बचाने व बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आपने लोक कला पर बहुत सी पुस्तकें लिखीं हैं: ''ठोडा'', ''सिंहटू'', ''भड़ाल्टू'', ''हिमाचल की देव पूजा पद्धति'', पांजड़ आदि। आप अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त, ''चूड़ेश्वर लोक नृत्य एवं सांस्कृतिक मण्डल'' के निर्देशक हैं, जिसके चलते आपने प्रदेश की लोक संस्कृति को समस्त भारत में ही नहीं, बल्कि टर्की, बुल्गारिया, ग्रीस, मेसोडोनिया आदि देशों मे जनमानस तक पहुँचाया है। लोक कला एवं संस्कृति में आपके अतुलनीय योगदानों को देखते हुए वर्ष 2018 में देश के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद द्वारा आपको लोक संगीतके लिए 'संगीत नाटक राष्ट्रीय पुरस्कार अकादमी पुरस्कार' प्रदान किया गया। इसी तरह पंजाब कला संस्कृति अकादमी जालंधर द्वारा आपको ''लोक गायन–नृत्य एवं लोक साहित्य पुरस्कार'' प्रदान किया गया।'सिरमौर श्री' की उपाधि से भी हिमोत्कर्ष संस्था, 'दिव्य हिमाचल' द्वारा आपको नवाजागया है। इसके अलावा भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी, सोनिया गांधी, डॉ. यशवन्त सिंह परमार जैसे महान नायकों द्वारा आपको कई बार सम्मानित किया गया है। वर्तमान में आप 81 वर्ष के हो चुके हैं, मगर आज भी आप उतने

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

ही सक्रिय हैं और पारम्परिक देवतालों, सांस्कृतिक तालों, लोक गाथाओं एवं लोक गीतों आदि को संग्रहित करने का कार्य कर रहे हैं।

श्री मस्त राम

संगीत की वंश–परम्परा को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे ले जाते ज़िला सिरमौर के श्री मस्त राम पेशे से ढोल वादक हैं। आपका जन्म श्री चान्दण सिंह और माता मैना देवी के घर सन् 1970 में गांव द्राबिल, डाकघर शिरी–क्यारी, तहसील शिलाई, ज़िला सिरमौर, हि.प्र. में हुआ। बाल्यावस्था में आपको लोकवाद्यों को सीखने की प्रेरणा आपके बुजुर्गों द्वारा मिली।

दैविक कार्यों में आप के स्थानीय सुप्रसिद्ध कुलदेव महासू और मां काली के कार्य में आप ढोल वादन द्वारा हाज़िरी देते हैं, जिसमें देव पूजा, देव आरती, देव–यात्रा, देव–मान्यताएं, देव आह्वान, देव–मेला, देव जागरण आदि गतिविधियां शामिल रहती हैं। इसी तरह प्रतिदिन आप देव महासू की चार बार मन्दिर में जाकर पारंपरिक देव वाद्यों के साथ पूजा करते हैं। इसके अलावा महाराज शिरगुल के कार्यों में भी आपको वादन हेतु बुलाया जाता है।वर्तमान में पारम्परिक लोक वाद्यों की भूमिका हमारे संस्कारों में धीरे–धीरे लुप्त होती चली जा रही है, वहीं श्री मस्तराम जैसे लोग कला इन कलाओं को जीवित रखने के लिए भरसक प्रयास कर रहे हैं। आप ढोल वादन के अलावा नगारा, रणसिंगा वाद्य, दुमाना बजाने में भी पारंगत हैं। आपका पारम्परिक लोक कला को बढ़ाने में विशेष योगदान हैं, जो कि पिछले 32 वर्षों से चला आ रहा है। आपने अनेक शिष्यों को लोक वादन का ज्ञान दिया है,वर्तमान में आप 51 वर्ष के हो चुके हैं और अभी भी पूरी सक्रियता से लोक कला के इन वाद्य यंत्रों को बचाने एवं बढ़ाने में अपना योगदान दे रहे हैं।

श्री मोहन सिंह

आपका 24 मार्च 1968 ई. में श्री सुखराम और माता चान्नो देवी के घर गांव कुहन्द, डाकघर शिलाई, तहसील शिलाई, ज़िला सिरमौर, हिमाचल प्रदेश में हुआ। आप पेशे से दुमाना वादक हैं। इसके अलावा कपड़े सिलाई करना, खेती–बाड़ी द्वारा आप परिवार का पालन पोषण करते हैं। पारम्परिक लोक वाद्यों के साथ आप पिछले 35 वर्षों से जुड़े हुए हैं और तहसील शिलाई में वाद्य यंत्रों द्वारा कला के प्रचार–प्रसार में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

धार्मिक परिप्रेक्ष्य में कुल देव भगवान परशुराम, देव शिरगुल, मां काली के अन्तर्गत आप वादन करते हैं। इनके अन्तर्गत आप प्रतिदिन चार बार सुबह, दिन, शाम और रात्रि की देव पूजा में देव वादन करते हैं। इसी तरह देव मेलों, त्योहारों, देव मान्यताओं, देव–जागरण, देव–यात्राओं, देव आह्वान में आप अनेक वर्षों से वादन करते आ रहे हैं। पारम्परिक लोक वाद्यों की भूमिका दैविक कार्यों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। देव कार्यों में नगारा, ढोल, दुमाना, रणसिंगा, थाली, कांसिया, घंटी आदि वाद्य बजाए जाते हैं।दैविक कार्यों की तरह आपका योगदान शुभ संस्कारों में भी देखने को मिलता है। जन्म संस्कार, मुण्डन संस्कार, जनेऊ संस्कार, विवाह संस्कार जैसे शुभ संस्कारों में आप 'शब्द' ताल बजाते हुए, बधाई के तौर वृन्द वादन से जनमानस को ओत–प्रोत करते हैं। इसके अलावा आप ढीली नाटी, तावलि नाटी, सिरमौरी नाटी, अन्य गीत–गाथाओं में लोक रंजन करते आ रहे हैं। अनेक वर्षों से आप ज़िला सिरमौर एवं प्रदेश भर में इन सभी कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी निभाते आ रहे हैं जो कि अतुलनीय है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

श्री गीता राम गंधर्व

संगीत जगत में कुछ शख्सियतें ऐसी होती हैं, जो हर वाद्य बजाने में पारंगत होती हैं। ऐसी ही एक विभूति है, श्री गीता राम गंधर्व। आप एक कुशल शहनाई, नगारा और ढोल वादक हैं। इसके अलावा आप रणसिंगा और करनाल भी बजाते हैं। आपका जन्म मां शांति देवी और पिता श्री किरपा राम के घर सन् 1974 में गांव देवठी–मझगांव, डा.–देवठी–मझगांव, तहसील–राजगढ़, ज़िला सिरमौर, हिमाचल प्रदेश में हुआ। बाल्यावस्था से ही आपको संगीत का माहौल मिला। आपके माता–पिता के देहांत के बाद आप पर घर की सारी जिम्मेवारियां आई, जिसके चलते आपने कक्षा 10वीं के बाद आपने स्कूल छोड़ दिया। आपने अपना खानदानी काम खेती–बाड़ी और मज़दूरी करना शुरू किया। लेकिन आपने संगीत सीखना बंद नहीं किया और गुरुओं के साथ कार्यक्रमों में जाना शुरु किया और गुरुओं के सानिध्य में रहकर उनका आशीष प्राप्त करते रहें।

आपने बताया कि,"पूजा के देवताल आज खत्म होते जा रहे हैं। जो हमारा गंधर्व कर्म है, वो अभी भी कुछ लोगों ने जिंदा रखा है, लेकिन यह चीजें अब लुप्त होती जा रही हैं। देवता के ताल हैं, पूजा का ताल हैं, सूरज नाहण हैं, देवता के हिंगरने का ताल है, इसी प्रकार कई ताल हैं। देवता के काम में सुबह 4 बजे जो पूजा बजती है, उसे 'चौगड़ी' कहते हैं। जब यह बजता है, तो इससे देवता चेतन हो जाता है, इस क्रिया में चार–पांच ताले बजती हैं, इसी प्रकार देवता हिंगरता भी है। इसे मुकड़ी' कहते हैं। इसके बाद 'पूजा ताल' बजती है और आरती के साथ सुबह इसे संपन्न किया जाता है।गंधर्वो का हिमाचल ही नहीं, पूरी दुनिया के लिए बहुत बड़ा योगदान है। कोई समझे या न समझे, लेकिन हमने अपनी कला एवं संस्कृति को आज भी जिंदा रखा है।आप लगभग 30–35 वर्षों से संगीत की सेवा कर रहे हैं और आज भी अपने को एक विद्यार्थी ही मानते हैं। आपकी वंश परम्परा में आपके दोनों पुत्र संगीत से जुड़े हैं और संगीत की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। वर्तमान में आप अनेक शिष्यों के साथ पारम्परिक लोक वाद्य कला का ज्ञान बांट रहे हैं। हिमाचल प्रदेश के कला क्षेत्र में आपका योगदान महत्त्वपूर्ण है।

श्री कुलदीप कुमार

आपका जन्म 16 सितंबर 1989 को श्री बलबीर सिंह और माता देबो देवी के घर गांव द्राबिल, डाकघर झकांडो, तहसील शिलाई, ज़िला सिरमौर, हिमाचल प्रदेश में हुआ। संगीत आपका खानदानी पेशा है। लगभग 9–10 पीढ़ी से लोक विद्या आपके खानदान में चली आ रही है, बुजुर्गों द्वारा यह विद्या आपको विरासत में प्राप्त हुई है। आप पिछले 20 वर्षों से दैविक कार्यों के वादन से जुड़े हैं। आपके कुलदेव महासू के अन्तर्गत आप प्रतिदिन मन्दिर से जुड़ी पूजा में चार पहर की पूजा बजाते हैं।

आपने बताया, "हमारे यहां बसंत पंचमी को बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। इसमें गाने बजाने की भूमिका बहुत अच्छी रहती है। देवता को मन्दिर से बादलों की गूंज के चलते बाहर लाया जाता है, इसमें 'भंडार' ताल बजाई जाती है। जब देवता बाहर आता है, तो हम उसे नमस्कार के स्वरूप में 'शब्द' ताल बजाते हैं। फिर देवता को नहाने के लिए पास के जल स्त्रोत के पास ले जाया जाता है, ले जाते हुए भी वादन चलता है और इसमें कम से कम 200 से 250 सौ लोग सम्मिलित रहते हैं। इस यात्रा में 'बटवाल' ताल बजाई जाती है। इसके साथ लोगों की समस्याएं सुनने के लिए 'गन्नी' ताल बजाई जाती है, इससे देवता को गुर में प्रवेश करवाया जाता है और 'गुर' के माध्यम से देवता लोगों की समस्याओं को हल करता है जहां–जहां भी देवता जाता है, वहां हमें

जाना पड़ता है। शिलाई, लगभग पूरा सिरमौर, शिमला, उत्तराखंड में भी जाना पड़ता है।''दैविक कार्यों की भांति ही सांस्कारिक गतिविधियों में आप शिरकत करते हैं। शुभ–संस्कारों में जैसे– जन्म, मुण्डन, जनेऊ, विवाह आदि संस्कारों में आप अनेक वर्षों से वादन कर रहे हैं। इन सभी शुभ अवसरों पर परिवार को 'बधाई' ताल रूपी बधाई दी जाती है। नौबत के अन्तर्गत बधाई, जंग, टुकड़े, परनो, तिहाईयों के साथ जन–जन को संबोधित किया जाता है। इसके अलावा नाटी, ढीली नाटी, ताउली नाटी, बजाकर लोकरंजन की प्रथा है। लगभग 20 वर्षों से आप संगीत के कार्यों को समस्त हिमाचल और बाहरी राज्य में प्रस्तुत कर रहे हैं। अतः प्रदेश की वादन लोक कला को बचाने और बढ़ाने में आपका योगदान अतुलनीय है।

निष्कर्ष

लोक वादकों की बात की जाए तो जन्म से मृत्यु तक समस्त संस्कारों पर लोक वाद्यों द्वारा वादन किया जाता है। इन वाद्यों द्वारा वादन से एक विशेष संदेश एवं सकारात्मक उर्जा का निर्वाह होता है, जो सभी सुनने वालों को सम्बन्धित स्थिति से रूबरू करवाता है। मंगलकार्यों जैसे मुण्डन संस्कार, विवाह आदि अवसरों पर लोक वाद्यों के वादन से श्रृंगारिक रस की उत्पत्ति स्पष्ट महसूस की जा सकती है। इसी प्रकार देव–भूमि होने के कारण यहां का अधिकतर संगीत मंदिरों, देव–उत्सवों और अन्य मांगलिक कार्यों से जुड़ा है। फलस्वरूप प्राचीन काल से ही लोक–वादकों द्वारा किया जाने वाला वादन मौखिक और परम्परागत रूप में चला आ रहा है। वर्तमान में इन वाद्यों को बजाने वाले वादकों की संख्या चिन्ता का विषय है। ऐसा इसलिए है क्योंकि, नई युवा पीढ़ी का बाहरी संगीत के प्रति अत्यधिक रूझान के कारण यह लोक–विधा अधिक प्रचार में नहीं है। इसी कारण इन वाद्यों को सुनने वालों और इसे समझने वालों की संख्या अत्यधिक कम है। हालांकि प्रदेश सरकार द्वारा पूरे प्रदेश में लोक संस्कृति एवं कला के संरक्षण के अनेक कदम उठाए जा रहे हैं और प्रदेश सरकार द्वारा हर वर्ष सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिससे लोक संस्कृतियों को सुरक्षित बचाया जा सके।

संदर्भ

कुमार, राजेश. (2005). हमीरपुर जनपद के वादक कलाकारों का लोक संगीत में योगदान, (अप्रकाशित दर्शन निष्णात शोध प्रबन्ध)संगीत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल, शिमला, हिमाचल प्रदेश।

गुप्ता, शिखा (2010). शास्त्रीय संगीत के उन्नयन में अवध के तंत्र–वादकों का योगदान, (अप्रकाशित विद्याा वाचस्पति शोध प्रबन्ध) संगीत विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।

ठाकुर, हरी सिंह (2002) हिमाचल प्रदेश के लोग संगीत का अध्ययन तथा वाद्य–वादन में उसका उपयोग,(अप्रकाशित विद्याा वाचस्पति शोध प्रबन्ध), संगीत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़।

पाल, वीरेन्द्र. (1989). मण्डी ज़िला के व्यवसायिक लोगों का लोकसंगीत,(अप्रकाशित दर्शन निष्णात शोध प्रबन्ध) संगीत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल, शिमला, हिमाचल प्रदेश

लाल, चिरंजीव. (2003). हिमाचल प्रदेश के सुषिर वाद्य, वादक एवं उनका सांगीतिक योगदान, संगीत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल, शिमला, हिमाचल प्रदेश

Gupta, S. (2010). Bhartiya sangeet ke unnayan me awadh ke tantra-vadkon ka yogdan, [unpublished Ph. D. dissertation]. Sangeet vibhag, Chhatarpati shahu jee maharaj vishwavidya Kanpur.

Kumar, R. (2005), hamirpur janpad ke vadak kalakaron ka lok sangeet me yogdan, [unpbublished M. Phil. dissertation] Sangeet vibhag, himachal Pradesh vishwavidyalay summerhill, Shimla, himachal Pradesh

Lal, C. (2003). Himachal Pradesh ke sushir vadya vadak evam unka sangitik yogdan, [unpublished dissertation]. Sangeet vibhag, himachal Pradesh vishwavidyalaya summerhill Shimla

Pal, V. (1989) Mandi zile ke vyvsayik logon ka loksangeet, [unpublished M. Phil dissertation]. Sangeet vibhag, himachal Pradesh vishwavidyalaya summerhill Shimla .

Thakur, H. S. (2002). Himachal Pradesh ke lok sangeet ka adhyayan tatha vadya-lvadan me uska upyog, [unpublished Ph. D. dissertation]. sangeet vibhag, Punjab vishwavidyalaya Chandigarh.

व्यक्तिगत साक्षात्कार

श्री विद्यानन्द सरैक द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 30/09/2020

श्री मस्त राम द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 29/09/2020

श्री बंसी राम द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 20/10/2020

श्री गीता राम गंधर्व द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 30/10/2020

श्री मस्त राम द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 20/10/2020

श्री मोहन सिंह कुमार द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 21/10/2020

श्री कुलदीप कुमार द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 21/10/2020